ज्ञान शांति मैत्री

टीका लगाएं, कोरोना भगाएं

मीडिया समय

जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों का प्रायोगिक अखबार

शुक्रवार, १८ जून २०२१

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की संगोष्ठी में शामिल हुए 12 कुलपति

गुरु पूर्णिमा पर हल्दीघाटी से द्वारका तक निकलेगी भगवद्गीता संदेश यात्रा

वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की ओर से हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में 18 जून 2021 को 'भगवद्गीता और महाराणा प्रताप : राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकार के सन्दर्भ में' विषय पर तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी दो सत्रों में सम्पन्न हुई. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के नेतृत्व में 11 विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने इसमें सहभागिता की.

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में भारतीय चरित्र निर्माण संस्था के संस्थापक अध्यक्ष एवं गीता मर्मज्ञ रामकृष्ण गोस्वामी ने अगले माह गुरु पूर्णिमा पर गीता संदेश यात्रा निकालने का ऐलान किया. प्रस्तावित यात्रा 18 जुलाई को हल्दी घाटी से आरम्भ होगी और 24 जुलाई को द्वारका में समाप्त होगी. यह यात्रा हल्दी घाटी चेतना अभियान का हिस्सा होगी. श्री गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप पर गीता का प्रभाव जन्मय से ही था। उन्होंने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए स्वभधर्म का पालन करते हुए एक राजपुरुष के स्वरधर्म के रूप में इसे चरितार्थ किया। राजस्थान स्टेट डिजास्टर रेस्पांस फोर्स के कमांडेंट पंकज चौधरी ने कहा कि भगवद्गीता आज भी प्रासंगिक और अर्थपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से महाराणा प्रताप के जीवनपर्यंत संघर्ष की प्रेरणा लेने का आहवान किया। पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक बी. नाग रमेश ने कहा कि महाराणा प्रताप को मध्यरयुग के प्रथम सेनानी के

रूप में जाना जाता है। उन्होंने सत्यंनिष्ठा से जीवन निर्वह कर एक सच्चे धर्म योद्धा के रूप में देश, धर्म, चारित्र्य और आत्मसन्मान की रक्षा के लिए संघर्ष किया। गुजरात राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रवि आर. त्रिपाठी ने कहा कि हमें साथ मिलकर भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने स्वयंशासन को विकसित कर महाराणा प्रताप के जीवन आदर्श के अनुसरण का आहवान किया। राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति गोपाल कृष्ण व्यास ने कहा कि महाराणा प्रताप जैसे लोगों ने इस देश को बनाया है। आज के समय में देश के स्वाभिमान को कायम रखने के लिए महाराणा प्रताप के विचारों से प्रेरणा ग्रहण करने की आवश्य कता है। अध्यक्षीय उदबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि हल्दीघाटी का युद्ध सभ्यता का युद्ध है। महाराणा प्रताप ने सर्वस्व न्योछावर कर इस युद्ध में विजय प्राप्त किया। उन्होंने भगवद्गीता का संदर्भ लेते हुए कहा कि यह ग्रंथ हमें सत धर्म और आत्मगौरव के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने हल्दीघाटी युद्ध को पराक्रम और वैभव तथा संकल्पम से सिद्धी का अस्त्र इतिहास बताया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठीा को प्रो. शुक्ला ने भारत के इतिहास में एक अनूठी घटना करार दिया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. एस. दुबे ने अपने वक्तव्य में राष्ट्रीय चेतना जगाने की आवश्यकता जताते हुए महाराणा प्रताप के विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. वेंकटेश्वरलु ने मानवाधिकार के संदर्भ में सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा की चर्चा की। जम्मू केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. अशोक ऐमा ने नई पीढ़ी को सांस्कृतिक सभ्यता के संस्कार देने पर बल दिया। त्रिपुरा केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. गंगाप्रसाद परसईन ने भगवद्गीता को एक अनिवार्य विषय के रूप में पढाने की आवश्यकता जताई। प्रो. जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि महाराणा प्रताप के विचार सार्वकालिक और प्रासंगिक है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि, अमरकंटक के कुलपति प्रो. प्रकाश मणि त्रिपाठी ने भगवद्गीता के समय काल के संदर्भों की चर्चा की। महात्मा गांधी केंद्रीय विवि, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने महाराणा प्रताप के विचार दर्शन को विवि के पाठ्यक्रमों में शामिल करने पर बल दिया। नेहरू ग्राम भारती विवि के कुलपति प्रो. राममोहन पाठक ने महाराणा प्रताप के जीवन को प्रेरक बताते हुए उनके विचार नई पीढ़ी तक ले जाने की बात की। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि, भोपाल के कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश ने कहा कि धर्म को संकीर्णता से बाहर निकालने की आवश्यकता है। प्रो. भक्त फूल सिंह महिला विवि, सोनीपत की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि महाराणा प्रताप मातृभूमि से प्रेम करने वाले सच्चे शासक थे। साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि की कुलपति प्रो. नीरजा ए. गुप्ता ने कहा कि एक दूसरे को आत्मसात करना ही मानवाधिकार है। दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि भारतीय इतिहास में महाराणा प्रताप जैसे अनेक नायक हैं। स्वागत वक्तव्य मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपाशंकर चौबे ने दिया. धन्यवाद ज्ञापन प्रति कुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्लि ने किया। दूसरे सत्र का संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया।

गीता की प्रेरणा से अधर्मियों का विनाश संभव : प्रो. परसईंन

त्रिपुरा केंद्रीय विवि के कुलपति **प्रो. गंगा प्रसाद परसईंन** ने गीता की चर्चा करते हुए कहा कि वह गीता के उपदेश ही थे जिसकी वजह से अर्जुन ने मानवाधिकार की रक्षार्थ कौरवों के विरुद्ध युद्ध किया और उसी गीता की प्रेरणा से पांडव सेना ने अधर्मियों का विनाश किया और धर्म के साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने महाराणा की वीरता को भी महिमामंडित किया। उन्होंने कहा कि राजा–महाराजाओं में एकता न होने को मुगलों और बाद में अंग्रेजों की गुलामी झेलने का कारण बताया। अगर उस वक़्त सभी रजवाड़े एकजुट होकर लड़ाई लड़ते तो पराधीनता का रसास्वादन नहीं करना पड़ता। साथ ही प्रो. परसईन ने भगवद्गीता को एक अनिवार्य विषय के रूप में पढाने की आवश्यकता जताई।

महाराणा प्रताप शूरवीरता का उदाहरण : प्रो. आर एस दुबे

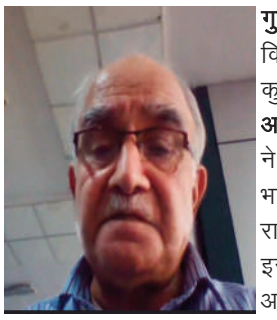

गुजरात केंद्रीय विवि के कुलपति **प्रो. आर एस दुबे** ने कहा कि भारत एक राष्ट्र है और इस राष्ट्र की अपनी एक हजारों वर्ष पुरानी परंपरा रही है। इस परंपरा का निर्माण हमारे ऋषिमुनियों के कर्मभक्ति और ज्ञान के द्वारा हुआ है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप देशभक्ति और शूरवीरता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भारत की परंपरा का निर्माण कर्मभक्ति और न्याय से हुआ है। आज हमें भी आवश्यकता है कि हम अपने कर्त्तव्य का पालन करें। जिस प्रकार हल्दी घाटी युद्ध में उन्होंने शूरवीरता का परिचय दिया वह एक मिशाल है। इन घटनाओं और परंपरा से हमें प्रेरित होने की आवश्यकता है।

महाराणा प्रताप के विचार दर्शन को पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए : प्रो. संजीव शर्मा

महात्मा गांधी केंद्रीय विवि मोतीहारी के कुलगुरु **प्रो. संजीव कुमार शर्मा** ने कहा कि सुरक्षा ,रक्षा रक्षण केवल सीमा सुरक्षा से नहीं है अपितु यह बहुत व्यापक है। सारे उपनिषदों का सार गीता में अर्जुन–कृष्ण संवाद के माध्यम से आया है। गीता को भारत में आरम्भिक तौर पर इसे कर्मकांड का ग्रंथ माना तो कुछ लोगों ने विवाद का ग्रंथ माना। राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्नों को मानवाधिकारों के प्रश्नों से संगत करते हुए श्रीमद्भगवत गीता के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। जो सत्य है, प्रिय है, हितकारी है ऐसे वांगमय को अपने विद्यार्थियों तक ले जाना है। इसे पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए।

एक दूसरे को आत्मसात करना ही मानवाधिकार है : प्रो नीरजा गुप्ता

साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विवि, साँची की कुलपति **प्रो. नीरजा ए. गुप्ता** ने कहा कि आत्मा का एक समांतर राज्य होता है, और वह भौतिक नहीं है। मानवाधिकार भले ही हम भौतिक रूप में गिन सकें, लेकिन भागवत गीता मानवाधिकार ही नहीं यथा अधिकार की बात करती है, और जब कोई यथा अधिकार कहता है तो यथा अधिकार के चार स्तंभ है और वह चार स्तंभ करुणा, उदारता, कौशल्य और ज्ञान। भौतिकवादी और कल्याणकारी इन दोनों दृष्टियों में भी भ्रम खड़ा होता है। क्या भौतिक उतना सत्य है जितना सत्य हम मानते हैं। या अंततः कल्याण ही विश्व का स्वरूप है। भागवत गीता में राजनीति, सहजनीति और कूटनीति की व्याख्या की गई है। राजनीति भीष्म कहते हैं, कूटनीति कृष्ण कहते हैं और सहजनीति विदुर कहते हैं।

युवाओं को राष्ट्र धर्म के बारे में शिक्षित करने की जरूरत : प्रो. अशोक ऐमा

जम्मू केंद्रीय विवि के कुलपति **प्रो. अशोक ऐमा** संगोष्ठी के दूसरे सत्र में अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि हमलोग करीब–करीब 1400 वर्षों से ऐसे वातावरण में रह रहे थे कि जहां अपनी संस्कृति के बारे में बातें नहीं कर पाते थे, जबकि हमारी संस्कृति में समस्त प्राणियों के लिए सद्भावना और विश्वकल्याण की भावना निहीत थी। ऐसे में यह संगोष्ठी एक अभूतपूर्व कार्य कर रहा है जिसमें महाराणा प्रताप जैसे महान योद्धा और प्रेरक व्यक्तिव पर चर्चा कर रहे हैं। इस अवसर पर उन्होंने समस्त आयोजकों ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी करने के लिए धन्यवाद दिया।

गीता में आत्मा की अमरता का बोध : प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

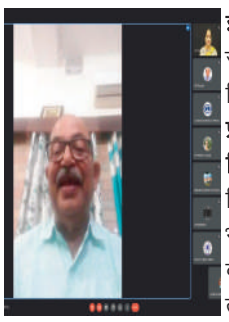

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि के कुलपति **प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी** ने कहा कि जब हम भागवत गीता की व्याख्या करते हैं तो स्वतः ही ज्ञान की अनुभूति हो जाती है, ठीक उसी प्रकार जैसे महाराणा प्रताप देश में साहस के प्रतिमान कहे जाते हैं। कर्म करते रहना और फल की इच्छा नहीं करने के गीता के सूत्र को महराना प्रताप ने अपने जीवन में उतारा और अकबर की बड़ी सेना को पराजित कर मुगल साम्राज्य के अवसान की शुरुआत कर दी। गीता में आत्मा की अमरता का बोध है, जो गीता के सूत्रों के मर्म को समझ लेता है वह सबसे ऊपर उठ कर महात्मा कहलाता है।

महाराणा प्रताप के विचारों को आत्मसात की जरूरत है : प्रो. राममोहन पाठक

नेहरू ग्राम भारती विवि के कुलपति **प्रो. राममोहन पाठक** ने कहा कि महाराणा प्रताप का स्मरण आज की तारीख में और ज्यादा प्रासंगिक इसलिए भी हो जाता है क्योंकि इतिहासकारों ने उनके साथ उचित न्याय नहीं किया। महाराणा प्रताप का जीवन प्रेरक है जिन्होंने राष्ट्र की अस्मिता को बचाकर आत्म गौरव को बढ़ाया है। उन्होंने श्याम नारायण पाण्डेय को याद करते हुए उनके द्वारा 18 सर्गों में लिखी हल्दीघाटी कविता को एक साहित्यिक कर्तव्य बताया और हल्दीघाटी युद्ध दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए हिंदी विश्वविद्यालय की सराहना की।

सांस्कृतिक अखंडता को जारी रखने की आवश्यकता है : प्रो. एच. वेंकटेश्वरलू

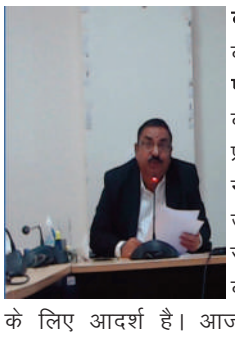

केरल केंद्रीय विवि के कुलपति **प्रो. एच. वेंकटेश्वरलू** ने कहा कि महाराणा प्रताप की युद्ध नीति, संघर्ष का जज़्बा आज के राजनैतिक नेताओं को और शासकों के लिए आदर्श है। आज हमें सांस्कृतिक अखंडता को जारी रखने की आवश्यकता है। इसलिए विश्वविद्यालयों के ऊपर इसे पूरा करने की अधिक ज़िम्मेदारी बनती है। मानवाधिकार पर जो वर्तमान में जो बहस चल रही है उसका समुचित चिंतन हम गीता को आधार बना कर कर सकते हैं। मानवाधिकार का असली अर्थ यह भी हो सकता है कि उसका सामाजिक,आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता से सभी को लाभ मिल सकता है।

महाराणा प्रताप के विचार सार्वकालिक और प्रासंगिक : प्रो. सारंगदेवोत

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के कुलपति **प्रो. सारंगदेवोत** ने कहा कि महाराणा प्रताप का पूरा जीवन राजतंत्र में लोकतांत्रिक स्थापना का जीता जागता उदाहरण है। महाराणा प्रताप के शाशन काल में मानवाधिकार, नारी स्मिता, राष्ट्रीय सुरक्षा, समानता, अन्याय और शोषण के विरोध का खास महत्व था। प्रताप का संघर्ष किसी धर्म, किसी जाति के विरोध नहीं था, निःस्वार्थ राष्ट्रीय स्मिता स्वातंत्र्य और स्वाभिमान का युद्ध था। अपनी माता से प्राप्त गीता के ज्ञान को हृदय में धारण करने वाले प्रताप असहनीय कष्टों में भी समग्र योग का धारण कर अपने राष्ट्र धर्म पर अडिग रहे।

सदैव धर्म और सत्य जैसे मूल्यों की जरूरत : प्रो. के. जी सुरेश

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि भोपाल के कुलपति **प्रो. के. जी सुरेश** ने कहा कि भारतीय परम्परा में एक शब्द बार–बार आता है 'धर्म', क्या धर्म शब्द में मानवाधिकार निहित नहीं है? उस धर्म में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना समाहित नहीं है क्या? महाभारत में जिस राज धर्म की बात की जाती है, उसमें मानवाधिकार सम्मिलित नहीं है क्या? धर्म शब्द का अर्थ हमारी परंपरा में काफ़ी व्यापक रहा है, लेकिन हमने धर्म शब्द को संकुचित करके जब रिलिजन में बांध दिया तब यह होना ही था। भारत में सदैव धर्म और सत्य जैसे मूल्यों को महत्व दिया है। जब तक अकबर द ग्रेट रहेगा तब तक प्रताप ग्रेट नहीं हो सकते, इसलिए तय करना होगा कि इनमें से किसे ग्रेट बनाना है।

मानवीय चेतना के विकास का सर्वोत्तम मार्ग भगवतगीता

वर्धा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की ओर से हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में शुक्रवार 'भगवद्गीता और महाराणा प्रताप : राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकार के सन्दर्भ में' विषय पर तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन शुक्रवार को पूर्वाह्न 11.00 बजे हुआ। विषय प्रवर्तन करते हुए भारतीय चरित्र निर्माण संस्था के संस्थापक अध्यक्ष रामकृष्ण गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप पर गीता का प्रभाव जन्म से ही था। उन्होंने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए स्वधर्म का पालन करते हुए एक राजपुरूष के स्वधर्म के रूप में इसे चरितार्थ किया।

राजस्थान स्टेट डिजास्टर रेस्पांस फोर्स के कमांडेंट पंकज चौधरी ने कहा कि भगवद्गीता आज भी प्रासंगिक और अर्थपूर्ण है। उन्हों ने युवाओं से महाराणा प्रताप के जीवनपर्यंत संघर्ष की प्रेरणा लेने का आहवान किया। बंगाल के पुलिस महानिदेशक बी. नाग रमेश ने कहा कि महाराणा प्रताप को मध्ययुग के प्रथम सेनानी के रूप में जाना जाता है। उन्होंने सत्यनिष्ठा से जीवन निर्वह कर एक सच्चे धर्म योद्धा के रूप में देश, धर्म, चारित्र्य और आत्मशसन्मासन की रक्षा के लिए संघर्ष किया। गुजरात राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रवि आर. त्रिपाठी ने कहा कि हमें साथ मिलकर भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने स्वरशासन को विकसित कर महाराणा प्रताप के जीवन आदर्श के

अनुसरण का आहवान किया। राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति गोपाल कृष्ण व्यास ने कहा कि महाराणा प्रताप जैसे लोगो ने इस देश को बनाया है। आज के समय में देश के स्वाभिमान को कायम रखने के लिए महाराणा प्रताप के विचारों का अनुसरण करने की आवश्यकता है।

अध्यक्षीय उदबोधन में हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि हल्दीघाटी का युद्ध सभ्यता का युद्ध है। महाराणा प्रताप ने सर्वस्व न्योछावर कर इस युद्ध में विजय प्राप्त किया। उन्होंने भगवद्गीता का संदर्भ लेते हुए कहा कि यह ग्रंथ हमें सत् धर्म और आत्मगौरव के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्होंने हल्दीघाटी युद्ध को पराक्रम और वैभव तथा संकल्प से सिद्धी का अजस्त्र इतिहास बताया। महाराणा प्रताप के संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए कुलपति प्रो. शुक्ल ने कहा कि महाराणा प्रताप ने अनेक चुनौतियों का समुचित प्रत्यूत्तर दिया और न्याय और मानवाधिकार की रक्षा के लिए अहर्निश संघर्ष किया। हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को उन्होंने भारत के इतिहास में एक अनूठी घटना करार दिया।

संगोष्ठी में जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक ऐमा, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच. वेंकटेश्वूरलु, त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगा प्रसाद परसईन, उदयपुर स्थित जनार्दन राय नागर राजस्था न विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, अमरकंटक स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव शर्मा, कुलपति, नेहरु ग्राम भारती विश्विविद्यालय के कुलपति प्रो. राममोहन पाठक, माखनलाल राष्ट्री य पत्रकारिता विवि के कुलपति प्रो. के जी सुरेश, बीपीएस महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत की कुलपति प्रो. सुषमा यादव, साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची की कुलपति प्रो. नीरजा ए. गुप्ता, जूनागढ़ स्थित भक्त कवि नरसिंह मेहता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चेतन त्रिवेदी और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रो. आर एस दुबे, कुलपति ने 'भगवद्गीता और महाराणा प्रताप : राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकार के सन्दर्भ में' अपना उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम का संयोजन मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपाशंकर चौबे ने किया तथा प्रति कुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के दर्शन व संस्कृति विभाग के अध्यक्ष डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया। कार्यक्रम का सजीव प्रसारण विश्वविद्यालय के फेसबुक, यू–ट्यूब चैनल और ट्विटर पर किया गया जिसमें अध्यापक, विद्यार्थी तथा शोधार्थी बड़ी संख्या में सहभागी हुए।

निष्ठा सिर्फ दिल में नहीं बल्कि व्यवहार में रखने की जरूरत

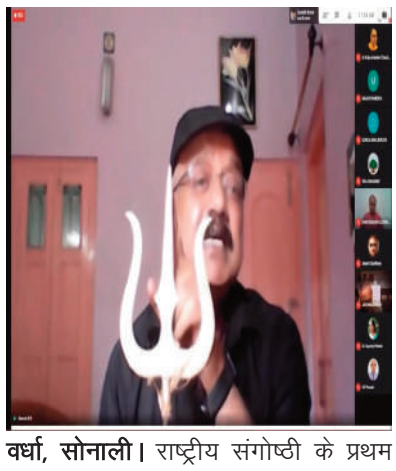

वर्धा, सोनाली। राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र में पुलिस महानिदेशक बी नाग रमेश ने कहा कि आज हल्दी घाटी दिवस के साथ साथ झांसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान दिवस भी है, हमें अपने महान योद्धाओं की वीरता और उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा लेने के साथ साथ अपने नौजवानों को इसकी प्रेरणा देते रहना चाहिए।

आई पी एस श्री बी नाग रमेश ने महाराणा प्रताप के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने न सिर्फ मेवाड़ के स्वाभिमान के लिए ही नहीं अपने देश धर्म और स्वाभिमान के लिए भी लड़ाई लड़ी और मरते दम तक सत्यनिष्ठा का साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने आगे कहा कि सत्य का अर्थ निरंतर यानि जो कल भी है आज भी है और आने वाले दिनों में भी यथावत रहेगा उसे ही हम सत्य कहते हैं। हम पु. लिसवाले सदा सत्यमेव जयते के सिद्धांत पर चलते हैं। निष्ठा सिर्फ दिल में रखने के लिए नहीं बल्कि व्यवहार के लिए भी होती है, महाराणा प्रताप का व्यवहार सदा सत्यनिष्ठा पर आधारित था।

स्वराज सिद्धि का प्रत्येक यत्न गीता से आता है : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, प्रकाश कुमार। हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले सत्र में महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत स्वातंत्र संग्राम में सर्वस्वीकृत महाराणा प्रताप की जयंती पर शुरू हुआ कार्यक्रम आज अपने चालीसवें दिन अपनी संपूर्णता पर है। प्रो. शुक्ल ने कहा कि स्वाधीनता का भाव भगवद्गीता से ही उत्पन्न होता है और आज जब देश में राक्षसी ताकतें हावी हैं तब महाराणा और भी प्रासंगिक हो जाते हैं।

उन्होंने कहा कि जो जागीर बनाने की मुहिम जो मुगलिया शासन ने शुरू की उसका विरोध करते हुए अपनी कुल परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महाराणा प्रताप ने अपना सर्वस्व न्योछावर करना स्वीकार किया मगर किसी भी कीमत पर स्वाधीनता और स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं किया। स्वराज सिद्धि का प्रत्येक यत्न गीता से आता है। आज जब स्वधर्म और आत्मगौरव पर खतरा है तब निष्काम कर्म करने की प्रेरणा का

कोई ग्रंथ है तो वह भगवद्गीता है और सर्वस्व न्योछावर करते हुए भी स्वाधीनता और स्वाभिमान की रक्षा की परंपरा का कोई द्योतक है तो वह महाराणा प्रताप हैं।

उन्होंने कहा, "चालीस दिनों के यत्न का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि भारतीय युवाओं को यह याद दिलाने के लिए महत्वपूर्ण है कि भारतीय युवकों के मनोबल के आगे कुछ भी नामुमकिन नहीं है और प्रताप इसके सबसे कीर्तिमान उदाहरणों में से एक हैं।" इतना ही नहीं, उन्होंने भारतीय युवाओं की शौर्यगाथा को याद दिलाते हुए कहा कि युद्ध केवल भुजबल नहीं अपितु उससे कहीं अधिक आत्मबल के सहारे लड़े जाते हैं। वह सिर्फ मनोबल ही था जिसके बल पर प्रताप भीलों की सेना लेकर मुगलों से टकरा गए, वह मनोबल ही था जिसके बल पर एक वीर सिपाही ने रायफल से अपराजेय माने जाने वाले पैटन टैंक तोड़ डाले और वह आत्मबल ही था जिसके सहारे मिग–21 से एफ–16 जैसे विमान को गिरा दिया गया।

साथ ही, कुलपति ने यह भी कहा कि यह कार्यक्रम अपने आप में रिकॉर्ड बनाने जा रहा है, यह अपने आप में पहला कार्यक्रम होगा जब एक ही मंच पर धर्म, न्याय और शिक्षा के क्षेत्र से इतनी संख्या में विद्वानों का जमघट लगा होगा। आज ही के दिन शक्ति स्वरूपा महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान दिवस भी है। इस अवसर पर प्रो. शुक्ल ने सुभद्राकुमारी चौहान की पंक्तियों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह काशी के होने के नाते वह खुद को रानी लक्ष्मीबाई के वंशज मानते हैं और इस बात पर उन्हें गर्व की अनुभूति हो रही है।

महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को अंगीकार करना होगा

वर्धा, रंजीत कुमार। राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति गोपाल कृष्ण व्यास जी ने कहा कि भारत की परंपरा रही है हमने किसी पर आक्रमण नहीं किया हम अहिंसा वादी विचारों के रहे हैं, लेकिन किसी ने हम पर युद्ध थोपने की कोशिश की, हमसे लड़ने की कोशिश की या हमपर हमला करने का प्रयास किया, तो हमने उसका करारा जवाब दिया है। उन्होंने बताया कि भारत वासियों के मानवाधिकार एवं स्वाभिमान की रक्षा का बीड़ा महाराणा प्रताप ने उठाया था, महाराणा प्रताप ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति बन कर अक्रांताओं के सामने खड़े हुए, जिसने इस देश की अस्मिता को बनाए रखने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। महाराणा प्रताप की जो भूमिका रही है इस देश को एक रखने के लिए संगठित करने के लिए उसे युवाओं के बीच फैलाने की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे कहा कि महाराणा प्रताप, महाराणा सांगा, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे देशभक्तों इस ने इस देश के मानवाधिकारों की रक्षा की है, इस देश को हमलावरों और अत्याचारियों से बचाया है, जिसकी वजह से आज हम आज़ादी से रह रहे हैं। जहां तक विश्व

गुरु बनने की बात है, हम विश्व गुरु आज भी हैं, पूरे विश्व में भारत को सम्मान से और श्रद्धा से देखा जाता है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप की जब भी बात होती है श्रद्धा उत्पन्न होती है शक्ति उत्पन्न होती है, हमारे भुजाओं में फड़कन महसूस होती है ताकत महसूस होती है। आज युवाओं को जागृत करने के लिए महाराणा प्रताप के विचारों को उनके सम्मुख रखने की ज़रूरत है। इस देश को एक रखने के लिए इस देश को अखंड रखने के लिए देश का स्वाभिमान बनाए रखने के लिए हमें महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को अंगीकार करना होगा और आने वाले समय में आगे बढ़ते हुए हम एक आधुनिक भारत का निर्माण करेंगे।

पाठ्यक्रम का हिस्सा बने महाराणा प्रताप का पराक्रम : प्रो. सुषमा यादव

वर्धा। सुविख्यात दार्शनिक और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि इतिहास जय–पराजय से नहीं, अपितु यश और कीर्ति से बनता है. प्रो. शुक्ल भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय सोनीपत, हरियाणा के आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चायन प्रकोष्ठ एवं भारत एशिया अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में रविवार (16 मई) को महाराणा प्रताप की 481 वीं जयंती पर 'महाराणा प्रताप, राष्ट्रीय सुरक्षा, मानवाधिकार और शिक्षा नीति' विषय पर आयोजित ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे.

संगोष्ठी की अध्यक्षता भक्त फूल सिंह महिला विवि सोनीपत की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने की. संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष, दार्शनिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी, विशिष्ट अतिथि के रूप में इतिहासकार प्रो. चंद्रशेखर शर्मा और जयपुर के पुलिस अधीक्षक पंकज चौधरी

(आईपीएस) ने संबोधित किया. प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि महाराणा प्रताप ने अपनी प्रजा की रक्षा के लिए अपने सुखों को तिलांजलि दी. उनका संग्राम स्वधर्म, स्वाभिमान और लोक कल्याण का था. परंतु इतिहास में इसका ठीक से प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ. अपने उद्‌बोधन में गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप में देश और धर्म की रक्षा दृष्टि थी. उन्होंने मानवाधिकार की सुरक्षा को शासन का धर्म समझकर संघर्ष किया. प्रो. चंद्रशेखर शर्मा ने मेवाड़ के संघर्ष और महाराणा प्रताप के राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकार सम्बन्धी कार्यों पर प्रकाश डाला. आईपीएस पंकज चौधरी ने महाराणा प्रताप को वैश्विक व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि उदयपुर और चित्तौड़ परिसर में भील समुदाय को साथ लेकर उन्होंने उनका सम्मान किया. अध्यक्षीय उद्‌बोधन में भक्त फूल सिंह महिला विवि की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि महाराणा प्रताप के युद्ध कौशल, साहस और पराक्रम को युवाओं के सामने लाने के लिए उनके समग्र चरित्र को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए. कार्यक्रम का संचालन आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चायन प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. रवि भूषण ने किया तथा आभार भारत एशिया अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ. नरेश भार्गव ने माना. संगोष्ठी में अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में ऑनलाइन उपस्थित थे.

जीवन प्रबंधन का विज्ञान है गीता : राम कृष्ण गोस्वामी

वर्धा। दार्शनिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी ने कहा है कि गीता मानव कल्याण का विज्ञान और जीवन प्रबंधन का शास्त्र है. श्री गोस्वामी आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा महाराष्ट्र के स्थापना दिवस पर 'कोरोना विषाद मुक्ति : गीता, गांव, गाय व उच्च शिक्षा नीति' पर आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे. श्री गोस्वामी ने कहा कि महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम, मुक्ताबाई, रामदास स्वामी आदि संतों ने भक्ति आंदोलन खड़ा किया. छत्रपति शिवाजी महाराज ने धर्म राज्य और रामराज्य की स्थापना कर लोक संग्रह तथा लोक चेतना का आगाज किया. शिक्षक, पत्रकार और राजनीतिज्ञ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने भगवद्‌गीता पर गीता रहस्य लिख कर गीता का दर्शन आत्मदर्शन और परमात्मा का दर्शन है, इसका प्रचार–प्रसार किया.

संगोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की. संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. कमल टावरी ने तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा की कुलपति प्रो. सुषमा यादव तथा राजस्थान बार काउंसिल के सदस्य डॉ. महेश शर्मा ने विचार रखे. श्री गोस्वामी ने भगवद्‌गीता के विभिन्न अध्यायों का उल्लेख करते हुए गीता के दर्शन और नीति पर विस्तार से चर्चा की. पूर्व आईएएस अधिकारी डॉ. कमल टावरी ने कहा कि हमें गांधी और विनोबा के प्रयोगों को गाँव को केंद्र में रखकर अमल में लाने की आवश्यकता है. खाली पड़े संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए संस्थाओं को स्वावलंबी बनाया जाना चाहिए. उन्होंने 'संतों से समृद्धि' का माडल वर्धा से विकसित कर उसका देशभर में एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करने का आह्वान किया. भक्त फूल सिंह महिला विवि, सोनीपत, हरियाणा की कुलपति

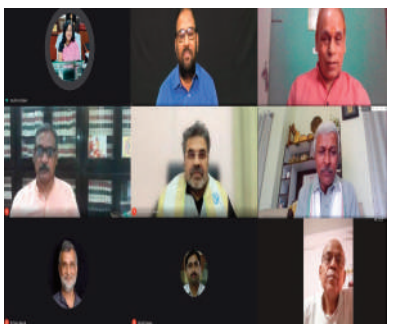

प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि कोरोना के विषाद में गांव ही मुक्ति का रास्ता दिखा सकते हैं. भारत को बचाने का श्रेय गावों के परिवेश और संस्कृति में ही है. राजस्थान बार काउंसिल के सदस्य डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि कोरोना के संकट में वातावरण में नकारात्मक ऊर्जा का संचार हो रहा है जिसका लोगों की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है. उन्होंने गीता को आत्मकल्याण का ग्रंथ करार देते हुए कहा कि गाँव, गीता और गाय कोरोना विषाद से मुक्ति के साधन हैं.

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि सन 1936 में महात्मा गांधी ने रचनात्मक कार्यक्रम के केंद्र में गांव को लक्ष्य रखा था. वर्धा को एक बार फिर केंद्र में रखकर उनके लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है. हिंदी विश्वविद्यालय इस दिशा में सचेष्ट है. कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने मराठी भाषा में किया. उन्होंने आईएएस अधिकारी माणिक मुंडे द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन भी किया. कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी के संयोजक विश्वविद्यालय के दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष तथा एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने किया. डॉ. वागीश राज शुक्ल ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई.

उदयपुर में हुई तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा। प्रसिद्ध दार्शनिक और महात्मा गांधी अंत. रराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि महाराणा प्रताप का युद्ध प्राणि मात्र के लिए था. सद्‌भाव तथा दया के लिए था. जैसा राम ने लोक के लिए संघर्ष किया वैसे ही मनुष्य के कल्याण के लिए महाराणा ने जीवनपर्यंत लड़ाई लड़ी. 'महाराणा प्रताप और राष्ट्रीय सुरक्षा एवं मानवाधिकार की रक्षा' विषय पर आयोजित ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर विशिष्ट अतिथि सम्बोधित कर रहे थे. संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष, गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप में देश और धर्म की रक्षा दृष्टि थी. प्रस्तोता के रूप में इतिहासकार प्रो. चंद्रशेखर शर्मा ने कहा कि महाराणा मानवाधिकार के प्रबल पक्षधर थे और मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए उन्होंने जनता के बीच जाकर संघर्ष किया. पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक डॉ. बी. एन. रमेश ने कहा कि महाराणा प्रताप ने भील समुदाय को संगठित कर उनकी रक्षा की.

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेओत ने कहा कि लोकतांत्रिक देश में चेतना जागृत करने के लिए महाराणा प्रताप का दर्शन हमें नई राह दिखाता है. कार्यक्रम का संचालन जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. हेमेंद्र चौधरी ने किया.

राष्ट्रवाद और मानवाधिकार के प्रतीक थे महाराणा प्रताप : प्रो. आर. एस. दुबे

वर्धा। सुविख्यात दार्शनिक और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि कोरोना काल में महाराणा प्रताप के त्याग से प्रेरणा लेने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप मानवीय गरिमा की स्थापना के लिए लडने वाले समर्पित योध्दा थे. प्रो. शुक्ल गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात की ओर से रविवार (23 मई) को महाराणा प्रताप की 481 वीं जयंती पर 'राष्ट्रीय सुरक्षा, मानवाधिकार और गीता : महाराणा प्रताप के जीवन के आलोक में' विषय पर आयोजित ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर विशिष्ट अतिथि सम्बोधित कर रहे थे.

संगोष्ठी की अध्यक्षता गुजरात केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. रमाशंकर दुबे ने की. संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा की कुलपति प्रो. सुषमा यादव, भक्त कवि नरसिंह मेहता विवि जूनागढ़, गुजरात के कुलपति प्रो. चेतन त्रिवेद ने तथा मुख्य वक्ता के रूप में पश्चिम बंगाल के रेग्यूलेशन्स एण्ड मेन्यूअल्स के पुलिस महानिदेशक डॉ. बी. एन. रमेश (आईपीएस) ने संबोधित किया. प्रस्तावित एवं बीज भाषण भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष, दार्शनिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा गीता मर्मज्ञ श्री रामकृष्ण गोस्वामी ने दिया. प्रो. शुक्ल ने कहा कि महाराणा प्रताप ने गीता को चरितार्थ करते हुए अपना जीवन समर्पित किया. समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठा के साथ उन्होंने शत्रु के मानवाधिकार की भी रक्षा की और समाज के अंतिम आदमी के लिए लड़ते रहे. कुलपति प्रो. शुक्ल ने आहवान किया कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए हमें हर क्षण

भारत माँ के लिए जीना चाहिए. प्रस्तावित एवं बीज भाषण में गीता मर्मज्ञ राम कृष्ण गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप ने धर्म और मानवाधिकार की रक्षा के लिए जीवनपर्यंत संघर्ष किया. पुलिस महानिदेशक डॉ. बी. एन. रमेश ने महाराणा प्रताप के युध्द कौशल की चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने सच्चाई से लडाई के साथ जीत का मंत्र दिया. भक्त कवि नरसिंह मेहता विवि जूनागढ़ के कुलपति प्रो. चेतन त्रिवेदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में महाराणा प्रताप के जीवन प्रसंग पर प्रकाश डाला.

भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा की कुलपति प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि महाराणा प्रताप ने जय–पराजय के लिए नहीं अपितु राष्ट्र गौरव व मातृभूमि की सुरक्षा के लिए युद्ध लडा. उन्हें एक समरस नायक के रूप में याद किया जाएगा. संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमाशंकर दुबे ने कहा कि महाराणा प्रताप राष्ट्रवाद और मानवाधिकार के प्रतीक थे. वे सामाजिक न्याय के सच्चे सेनानी थे. कार्यक्रम का संयोजन गुजरात केंद्रीय विवि के शिक्षा अध्ययन संस्थान के संकायाध्यक्ष प्रो. एच. बी. पटेल ने किया. संगोष्ठी में अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में ऑनलाइन उपस्थित थे.

इतिहास गढ़ने वाले राष्ट्रभक्त थे महाराणा प्रताप : बी. एन. रमेश

वर्धा। जाने–माने चिंतक और पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक श्री बी. एन. रमेश (आईपीएस) ने कहा है कि महाराणा प्रताप इतिहास को गढ़ने वाले राष्ट्र भक्त थे. बी. एन. रमेश महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ तथा संस्कृति विद्यापीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में रविवार को महाराणा प्रताप की 481 वीं जन्म जयंती के अवसर पर 'महाराणा प्रताप और राष्ट्रीय सुरक्षा एवं मानवाधिकार की रक्षा' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे.

संगोष्ठी की अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की. संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष, दार्शनिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता तथा गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी, विशिष्ट अतिथि के रूप में भक्तकवि नरसिंह मेहता विश्वविद्यालय, जूनागढ़, गुजरात के कुलपति प्रो. चेतन त्रिवेदी तथा इतिहासकार व शिक्षाविद् डॉ. कृष्ण स्वरूप गुप्ता ने संबोधित किया. बी. एन. रमेश ने कहा कि महाराणा प्रताप राष्ट्र भक्ति के प्रतीक थे. उन्होंने अकबर को कड़ी टक्कर देते हुए आत्मसम्मान, देशभक्ति और अदम्य साहस का परिचय दिया. महाराणा प्रताप को एक अच्छे संगठक, प्राणीमात्र के रक्षक और इतिहास के रचनाकार के रूप में याद किया जाएगा. इस अवसर पर गीता मर्मज्ञ श्री राम कृष्ण गोस्वामी ने कहा है कि महाराणा प्रताप धर्म और संस्कृति के प्रतिनिधि नायक थे. उन्होंने देश व धर्म की रक्षा के लिए

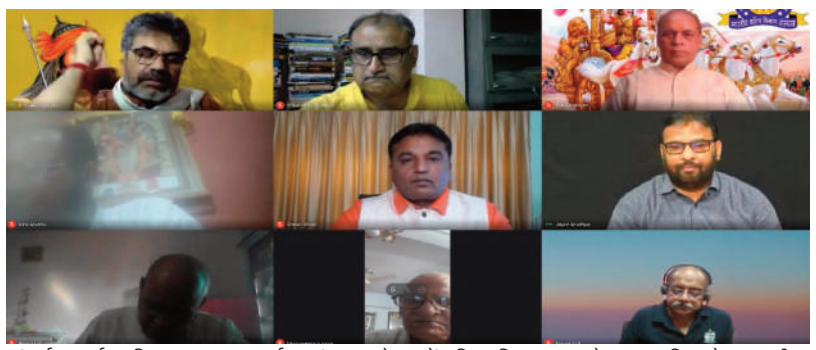

संपूर्ण समर्पण किया. उनका दर्शन संकल्प से सिद्धि तक का अनुष्ठान है. महाराणा प्रताप ने जीवन से कोई समझौता न करते हुए देश के लिए ऐश्वर्य को त्याग दिया. आज के संकट की स्थिति में उनके विचारों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है. श्री गोस्वामी ने कहा कि महाराणा प्रताप के पराक्रम पर जन आंदोलन का आगाज़ करने के लिए विश्वविद्यालयों को पहल करनी चाहिए.

भक्तकवि नरसिंह मेहता विश्वविद्यालय, जूनागढ़, गुजरात के कुलपति प्रो. चेतन त्रिवेदी ने महाराणा प्रताप को संघर्ष का प्रतीक करार देते हुए उनके समग्र चरित्र को नई पीढ़ी को पढाने की आवश्यकता बताई. उन्होंने नरसिंह मेहता व मीराबाई की भक्ति परंपरा पर भी प्रकाश डाला. इतिहासकार व शिक्षाविद् डॉ. कृष्ण स्वरूप गुप्ता ने कहा कि आज की स्थिति में विपरीत परिस्थितियों को कैसे अनुकूल बनाया जा सकता है इसका बोध महाराणा प्रताप के जीवन – संघर्ष में मिलता है. स्वतंत्रता को शाश्वत तरीके से प्राप्त करना और मानवाधिकार की सुरक्षा के उनके कार्य हमारे लिए मार्गदर्शक हैं. अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि महाराणा प्रताप के संघर्ष से हम यह प्रेरणा ले सकते हैं कि कैसे उन्होंने निरंतर संघर्ष और समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए कार्य किया. युद्ध के बीच मानवता बची रहे, इसके लिए महाराणा प्रताप एक आदर्श है. प्रो शुक्ल ने कहा कि मनुष्यता, मानव की गरिमा और स्वतंत्रता तथा स्वाभिमान की दृष्टि को समझने में महाराणा प्रताप के विचार बहुत प्रासंगिक हैं. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता, वेबिनार के संयोजक प्रो. कृपाशंकर चौबे ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया. कार्यक्रम का संचालन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष तथा एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. जयंत उपाध्याय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन दर्शन एवं संस्कृति विभाग के अधिष्ठाता प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया. डॉ. वागीश राज शुक्ल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति और विश्वविद्यालय के कुलगीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ. वेबिनार में अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की.

पंजाब केंद्रीय विवि में गीता और महाराणा प्रताप पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

वर्धा। पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा के कुलपति प्रो. राघवेंद्र पी. तिवारी के नेतृत्व में 30 मई को 'राष्ट्रीय सुरक्षा, मानवाधिकार, महाराणा प्रताप और गीता' (राष्ट्रीय सुरक्षा) विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सारस्वत अतिथि के रूप में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, सोनीपत के कुलपति प्रो सुषमा यादव और डॉ राजेंद्र पेंसिया, आईएएस थे।

इस कार्यक्रम में भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष श्री राम कृष्ण गोस्वामी ने प्रशस्तिक एवं बीज वक्तव्य दिया। सारस्वत अतिथि, प्रो. रजनीश शुक्ला ने कहा कि जब भी धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष होता है, तब राष्ट्रीय

सुरक्षा और मानवाधिकारों का प्रश्न प्रचलित परिदृश्य में चर्चा के लिए बहुत उपयुक्त हो जाता है। इन मुद्दों को हल करने के लिए, हम 'श्रीमद्भगवद गीता' का मार्गदर्शन ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत की आत्मा हमारे प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों जैसे सत्य, स्नेह, दया, बलिदान आदि में निहित है। इन सांस्कृतिक मूल्यों का पालन करके राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकारों को सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रो. शुक्ल ने उल्लेख किया कि महाराणा प्रताप ने अपने देशवासियों के मानवाधिकारों और राष्ट्र सुरक्षा की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी थी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, प्रो सुषमा यादव, कुलपति, बीपीएसएमवी, सोनीपत ने अपने व्याख्यान के दौरान 'धर्म और कर्म' के सिद्धांत, भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में 'मानवाधिकार' और 'देशभक्ति' की व्यापक अवधारणा पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने रेखांकित किया कि गीता, रामायण, ऋग्वेद और अन्य पवित्र शास्त्रों ने एक अच्छे इंसान के गुणों के बारे में हमारा मार्गदर्शन किया है, जिसका पालन करके सभी के बुनियादी मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

उन्होंने कहा कि मातृभूमि और मानवता की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप की निस्वार्थ सेवा हमारी आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करती रहेगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बावा सिंह, विभागाध्यक्ष, दक्षिण और मध्य एशियाई अध्ययन विभाग द्वारा किया गया और प्रो. वी.के. गर्ग, डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्तुत किया।

भगवद्गीता ज्ञान-विज्ञान महायज्ञ!

18 जुलाई रविवार से 24 जुलाई शनिवार तक

मुख्य उद्देश्य :–

1. विश्व शांति व सहयोग.
2. राष्ट्रीय सुरक्षा व गौरव.
3. मानवाधिकारों की रक्षा.
4. अपराधों पर नियंत्रण.
5. मानव संसाधन विकास.

सहयोग

मेवाड़ से द्वारिका तक निकलेगी गीता यात्रा

भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान ने हल्दीघाटी के इस धर्मयुद्ध को राष्ट्रीय और सामाजिक सुरक्षा व न्याय की व्यवस्था तथा मानवाधिकारों की रक्षा का प्रेरणास्रोत मानकर महाराणा प्रताप जयंती पर 09 मई रविवार सन् 2010 को अपराधमुक्त भारत निर्माण का संकल्प लिया. राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग के तत्कालीन माननीय अध्यक्ष तथा मद्रास व कर्नाटक उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एनके जैन ने भी भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान की इस दृष्टि का समर्थन किया और वह उदयपुर केन्द्रीय कारागार में संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मार्गदर्शन हेतु आए....

राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकारों की रक्षा का नेतृत्व करेगा भारत

वर्धा, कुमार प्रियतम। भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष राम कृष्ण गोस्वामी ने अपना विद्वत व्याख्यान देते हुए गीता के श्लोक "यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्" से विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने भागवत गीता के 18 वें अध्याय के 32वें श्लोक में कहा है कि हम अधर्म को भी धर्म मानकर बुद्धि, मन, संसाधन के साथ उस अधर्म पर चलने लगते हैं और अधर्म पर चलने के बाद भी हम ये आशा करते हैं कि हमारा कल्याण होगा, हमारे परिवार, समाज और प्रदेश का कल्याण होगा, ऐसी आकांक्षा हम लोग पाल लेते हैं। इसलिए जब तक धर्म–अधर्म का विवेक लोगों में नहीं होगा तब तक व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का विकास और न्याय की व्यवस्था कैसे हो सकती है? यह एक गंभीर चिंतन का विषय है।

राम कृष्ण गोस्वामी हल्दी घाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए आगे कहा कि महाराणा प्रताप की गुरु, उनकी माँ ने उन्हें भागवत गीता और कृष्ण की भक्ति के माध्यम से धर्म और दायित्वों की शिक्षा प्रदान की थी। ऐसी शिक्षा पाकर ही

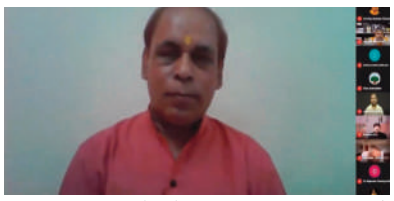

महाराणा प्रताप ने घोषणा कर दी थी कि, "मैं विधर्म और विदेशी, अन्यायी सत्ताओं को स्वीकार नहीं करूंगा। मेरी स्वतंत्रता, मेरी आजादी और अपने लोगों के मानवाधिकार हनन को कभी स्वीकार नहीं करूंगा। मर सकता हूँ पर झुक नहीं सकता, गुलामी स्वीकार नहीं कर सकता। उसी महाराणा प्रताप को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के परिपेक्ष्य में देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वीकार किया। ऐसे महाराणा प्रताप के स्वधर्म को भारत अपना स्वधर्म मानता है इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकारों की रक्षा का विश्व नेतृत्व भारत करेगा, इसमें कोई दो राय नहीं है। राम कृष्ण गोस्वामी ने भगवत गीता को विश्व की शांति और सुरक्षा का घोषणापत्र भी करार दिया और अपना ओजस्वी वक्तव्य भी गीता के श्लोक "परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृताम्, धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे से समाप्त किया।

शास्त्र और शस्त्र दोनों धारण करने वाला ही है कर्मयोगी : राजेन्द्र पेंसिया

वर्धा, शानु झा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. पेंसिया ने अपना वक्तव्य दिया। आगरा विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र पेंसिया (आईएएस) ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं, "एक कर्मयोगी ऐसा होना चाहिए जिसमें कल्याण और सेवा की भावना हो, जिसके स्वभाव में उदारता हो, जिसके हृदय में करुणा हो, जो दूसरों के सुख से सुखी और दुख से दुखी हो, जो शास्त्र और शस्त्र दोनों को बराबर धारण करे।"

डॉ. पेंसिया ने महारानी लक्ष्मीबाई के पुण्यतिथि पर उनको भी नमन किया जिन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए मात्र 29 वर्ष की आयु में अपने प्राण न्योक्षावर कर दिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्र सुरक्षा को अक्षुण रखना मानवाधिकार प्राप्त करने की दिशा में पहला प्रयास है। राष्ट्र सुरक्षित तो सभी मनुष्य सुरक्षित, उनके मानवाधिकार भी

सुरक्षित और उनकी गरिमा भी सुरक्षित। उन्होंने कहा कि आज यह नहीं संभव है कि भगवान कृष्ण या भगवान राम अवतार लें। उस समय एक कंस और एक रावण था तो एक–एक अवतार की ही आवश्यकता थी किंतु आज हर व्यक्ति के मन में अनैतिकता आ चुकी है। किसी न किसी रूप में अधर्म की पैठ हो चुकी है। इसलिए, 'यदा यदा ही धर्मस्य' की तरह प्रत्येक व्यक्ति को कल्कि अवतार के रूप में प्रस्तुत होना पड़ेगा।

आज के समय में शास्त्र और शस्त्र दोनों धारण करने वाला ही सच्चा कर्मयोगी है। डॉ. पेंसिया ने महाराण प्रताप के बारे में कहा कि एकलिंग जी के दीवान वीरशेरोमानी महाराणा प्रताप ने अपने राज्य के नागरिकों की स्वतंत्रता और अस्मिता को आततायी आक्रांता मुग़लों के हाथों में बंधक नहीं रखा तथा सुदर्शन चक्रधारी योगेश्वर भगवान कृष्ण की तरह हल्दीघाटी की मिट्टी को विधर्मियों और अधर्मियों के रक्त से कुरूक्षेत्र की तरह लाल कर दिया। वह ना कभी रुके, ना झुके, ना थके और समय आने पर चूके भी नहीं। इसलिए आज भी भारत के साथ–साथ राजस्थान की मिट्टी का प्रत्येक कण राणा को पुकारता है, हवा प्रताप के ही गीत गाती है, वहां की लोकसंस्कृति मेवाड़ी राणा की वीरता को बिखेरती है। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि गीता सार को मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड ने पाठ्यक्रम में समाहित किया है। जो एक अच्छी पहल है। उन्होंने आह्वान करते हुए कहा कि इसे एक अभियान के रूप में शुरू करना चाहिए। जिसमें बचपन से ही श्रीमद्भागवत गीता को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए।

प्रेरणा का स्रोत है महाराणा प्रताप का व्यक्तित्व

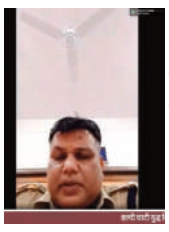

वर्धा, चांदनी कुमारी। हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भगवद्गीता और महाराणा प्रताप राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाअधिकार के संदर्भ में' महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा एक दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान स्टेट डिज़ास्टर रेस्पॉन्स फ़ोर्स के कमांडेंट पंकज चौधरी ने तमाम बुद्धिजीवियों और विद्वानों को संबोधित करते हुए कहा कि महाराणा प्रताप का विशाल व्यक्तित्व किसी जाति–सम्प्रदाय की नहीं अपितु सभी सम्प्रदायों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। मानवाधिकार तथा भगवद्गीता की प्रासंगिकता पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि गीता हमें इंसानियत और मानवता का पाठ पढ़ाती है और राष्ट्रधर्म को समझने का मार्ग भी प्रशस्त करती है। गीता सदा प्रासंगिक थी और सदा प्रासंगिक रहेगी।

स्व–अनुशासन विकसित करने पर युवा वर्ग दें बल : न्यायमूर्ति रवि त्रिपाठी

वर्धा, चांदनी कुमारी। हल्दीघाटी युद्ध दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भगवद्गीता और महाराणा प्रताप : राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवाधिकार के संदर्भ में' महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा एक दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें न्यायमूर्ति रवि त्रिपाठी ने कहा कि महाराणा प्रताप को जो सम्मान मिलना चाहिए था वह उन्हें नहीं मिला मगर उसपर अफ़सोस करने की ज़रूरत नहीं, लेकिन महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को नए परिपेक्ष्य के साथ छात्रों को बताए जाने की आवश्यकता है।

महाराणा प्रताप के व्यक्तिव पर अनुशासन के प्रभाव को अहम तत्व बताते हुए कहा, "डिसिप्लिन दो तरह की होती है– सेल्फ़–डिसिप्लिन और इम्पोज्ड–डिसिप्लिन। युवा वर्ग का आह्वान करते हुए उन्हें अपने

अंदर सेल्फ़–डिसिप्लिन विकसित करने पर बल दिया क्योंकि इम्पोज्ड–डिसिप्लिन लोगों को एक तरह के बंधन में बांधता है जिस कारण व्यक्ति हमेशा उससे बाहर निकलने की कोशिश करता है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में अर्जुन को सेल्फ़–डिसिप्लिन ही सिखाया है। अगर हमारे देश के युवा सेल्फ़–डिसिप्लिन को अपनाते हैं तो हमारे देश को हर क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि आज युवाओं में निराशा व्याप्त है कि देश में चारों ओर भ्रष्टाचार फैला हुआ है लेकिन ऐसी बात नहीं है। उन्होंने देखने के नज़रिए को बदलने पर बल दिया। भारत एक ऐसा देश है जिसने कभी किसी देश पे पहले हमला नहीं किया मगर जब कभी बुराई से लड़ने की बात रही हो तो उदाहरण देते हुए कहा चाहे वो कोरोना हो या आतंकवाद भारत हमेशा अग्रणी रहा है। न्यायमूर्ति त्रिपाठी ने कहा कि महाराणा प्रताप किसी परिचय के मोहताज नहीं वे हमारे दिल में हैं, रक्त में बसे हुए हैं मगर इसे थोड़ा–सा नए परिप्रेक्ष्य में बताया जाना चाहिए और महाराणा के व्यक्तिव को प्रेषित करने के लिए संचार एक बड़ा सुलभ माध्यम है। महात्मा गांधी के अन्तोदय का मक़सद बताते हुए कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक बात पहुंचाना ही ध्येय होना चाहिए।

संपादक

चन्द्र मणि

संपादन सहयोग

नंदिनी सिन्हा, चांदनी साह, सोनाली, कुमार प्रियतम, रंजीत कुमार, शानू झा और प्रकाश

प्रकाशक एवं मुद्रक

जनसंचार विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा